
क़ब्र परस्ती
का रद्द
हदीस की रोशनी में
http://salfibooks.blogspot.com

☣Topic

कब्र परस्ती का रद्द हदीस की रौशनी में

✔ सवाल : आजकल पक्की क़ब्रे बनाने का और उसपर इमारत तामीर करने का खूब रिवाज है क्या ऐसा करना शरई एतेबार से दुरुस्त है?

☑जवाब : पक्की क़ब्रे बनाना और कब्रो पर इमारत तामीर करना इस्लाम में कतई जायज नहीं है और रसूलुल्लाह (ﷺ) के सरिह हुक्म के खिलाफ है।

इसकी दलील इस तरह से हैं:-

۞ "हजरत जाबिर रजि. से रिवायत है की रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पुख्ता कब्रे बनाने और और उनपर बैठने और इमारत तामीर करने से मना फ़र्माया है"

📚Reference : Sahih Muslim 2245 (970)

بَابُ النَّهْيِ عَنْ تَجْصِيصِ الْقَبْرِ وَالْبِنَاءِ عَلَيْهِ

2245 - وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ قَالَ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُجَصَّصَ الْقَبْرُ وَأَنْ يُقْعَدَ عَلَيْهِ وَأَنْ يُبْنَى عَلَيْهِ •

باب: پختہ قبر بنانے اور قبر پر عمارت تعمیر کرنے کی ممانعت

2245 - ابو بکر بن ابی شیبہ، حفص بن غیاث، ابن جریج، ابوالزبیر، حضرت جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے قبروں کے پختہ بنانے اور اس پر بیٹھنے اور ان پر تعمیرات کرنے سے منع فرمایا ہے۔

इस सहीह हदीस से मालूम हुआ की पक्की क़ब्रे बनाना और उन पर इमारत तामीर करना हराम है।

✔ सवाल : रसूलुल्लाह (ﷺ) के इंतेक़ाल के बाद आप (ﷺ) की कब्रे-मुबारक घर में किस वजह से बनाई गयी?

✅ सवाल : रसूलुल्लाह (ﷺ) के इंतेक़ाल के बाद आप (ﷺ) की कब्रे-मुबारक घर में किस वजह से बनाई गयी?

☑जवाब :

🔅 इब्ने-जूरैज रह. से मरवी है, वो कहते है की मुझे मेरे वालिद ने यह हदीस सुनाई की जब रसूलुल्लाह (ﷺ) का इंतेक़ाल हो गया तब , नबी (ﷺ) के सहाबा को कुछ समझ नहीं आ रहा था की वो नबी (ﷺ) को कहा दफ़न करे, यहाँ तक के सैयदना अबु बकर सिद्दीक रजि. ने कहा, मेने रसूलुल्लाह (ﷺ) को यु फरमाते हुए सुना था के "हर नबी की कब्र वही बनाई जाती जहा इनका इंतेक़ाल होता है" , चुनाँचे आप (ﷺ) के बिस्तर को हटा कर इसी के नीचे वाली जगह को कब्र के लिए खोदा गया"

📚Reference : Musnad Ahmed 27

(27) ـ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي: أَنَّ أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ لَمْ يَدْرُوا أَيْنَ يَقْبُرُونَ النَّبِيَّ ﷺ حَتَّى قَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَنْ يُقْبَرَ نَبِيٌّ إِلَّا حَيْثُ يَمُوتُ.)) فَأَخَّرُوا فِرَاشَهُ وَحَفَرُوا لَهُ تَحْتَ فِرَاشِهِ. (مسند احمد: ۲۷)

ابن جریج سے مروی ہے، وہ کہتے ہیں: مجھے میرے والد نے بتلایا ہے کہ نبی کریم ﷺ کے صحابہ کو کچھ سمجھ نہیں آ رہی تھی کہ وہ نبی کریم ﷺ کو کہاں دفن کریں، یہاں تک کہ سیدنا ابوبکر رضی اللہ عنہ نے کہا: میں نے رسول اللہ ﷺ کو یوں فرماتے سنا تھا کہ ''نبی جہاں فوت ہوتا ہے، اسے وہیں دفن کیا جاتا ہے۔'' چنانچہ آپ ﷺ کے بستر کو ہٹا کر اسی کے نیچے والی جگہ کو قبر کے لیے کھودا گیا۔

فوائد:...... یہ وجہ تھی کہ نبی کریم ﷺ کی قبر آپ ﷺ کے گھر میں ہی بنائی گئی اور آپ ﷺ کی قبر کو دیکھ کر سیدنا ابوبکر رضی اللہ عنہ اور سیدنا عمر رضی اللہ عنہ کو بھی آپ ﷺ کے پہلو میں دفنا دیا گیا، بعد میں مسجد نبوی کی توسیع کی گئی۔

تخريج: حديث قوى بطرقه، أخرجه ابن ماجه: ١٦٢٨، والترمذى: ١٠١٨ (انظر: ٢٧)

यही वजह थी की रसूलुल्लाह (ﷺ) की कब्र-मुबारक आप (ﷺ) के घर में ही बनाई गयी ।

सवाल : रसूलुल्लाह (ﷺ) की कब्र-मुबारक आप (ﷺ) के घर में बना देने के बाद, मौजूद घर की इमारत को हटा कर कब्रे-मुबारक को नुमाया किस वजह नहीं किया गया ?

☑जवाब : रसूलुल्लाह (ﷺ) की कब्र को कही सज्दागाह न बना लिया जाए इसलिए इमारत को हटा कर कब्रे-मुबारक को नुमाया नहीं रखा गया ।

इसकी दलील इस तरह से हैं:-

सय्यिदा आइशा रजि. से रिवायत है की रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया-"अल्लाह तआला यहुदो-नसारा पर लानत करे उन्होंने अम्बिया अल्लैहिस्सलाम की कब्रो को मस्जिदे बना लिया",

उम्मुल - मोमिनींन हजरत आइशा रजि. फरमाती है,"अगर यह अंदेशा ना होता तो आप की कब्र खुली जगह पर बनाई जाती और नुमाया रखी जाती, लेकिन डर हुआ कि इसको सज्दागाह ना बना लिया जाएं"

Reference : Sahih Bukhari 1390

١٣٩٠ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ هِلَالٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي مَرَضِهِ الَّذِي لَمْ يَقُمْ مِنْهُ: ((لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ)). لَوْ لَا ذَلِكَ أُبْرِزَ قَبْرُهُ، غَيْرَ أَنَّهُ خَشِيَ - أَوْ خُشِيَ - أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا)). وَعَنْ هِلَالٍ قَالَ: كَنَّانِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ وَلَمْ يُولَدْ لِي. [راجع: ٤٣٥]

(۱۳۹۰) ہم سے موسیٰ بن اسماعیل نے بیان کیا' انہوں نے کہا کہ ہم سے ابو عوانہ نے بیان کیا' ان سے ہلال بن حمید نے' ان سے عروہ نے اور ان سے ام المومنین حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے کہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے اس مرض کے موقع پر فرمایا تھا جس سے آپ جانبر نہ ہو سکے تھے کہ اللہ تعالیٰ کی یہود و نصاریٰ پر لعنت ہو. انہوں نے اپنے انبیاء کی قبروں کو مساجد بنا لیا۔ اگر یہ ڈر نہ ہوتا تو آپ کی قبر بھی کھلی رہنے دی جاتی۔ لیکن ڈر اس کا ہے کہ کہیں اسے بھی لوگ سجدہ گاہ نہ بنا لیں۔ اور ہلال سے روایت ہے کہ عروہ بن زبیر نے میری کنیت (ابو عوانہ یعنی عوانہ کے والد) رکھ دی تھی ورنہ میرے کوئی اولاد نہ تھی۔

✓ सवाल : क्या सहाबा ने नबी (ﷺ) कब्र मुबारक को पक्का (पुख्ता) बनाया और कब्रे-मुबारक पर इमारत तामीर की?

☑जवाब : सहाबा किराम रजि. ने नबी (ﷺ) की कब्र को पुख्ता नहीं बनाया और न ही इसपर इमारत तामीर की गयी क्योंकि :-

"हजरत जाबिर रजि. से रिवायत है की रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पुख्ता कब्रे बनाने और और उनपर बैठने और इमारत तामीर करने से मना फ़र्माया है"

📚Reference : Sahih Muslim 2245 (970)

इस हदीस को मद्देनजर रखते हुए सहाबा ने आप (ﷺ) की कब्र को न तो पक्का बनाया न ही उस पर इमारत बनाई बल्कि जो इमारत पहले से बनी थी यानी नबी (ﷺ) का घर, उसी के अंदर आपको दफनाया गया। सहाबा किराम ने दफनाने के बाद कब्र पर "एक्स्ट्रा" अपनी तरफ से कोई तामीरात की हो इसका कोई सबूत सहीह हदीस से नहीं मिलता हैं।

✓ सवाल : हजरत उमर रजि. और अबु बक्र रजि को नबी के पास क्यों दफनाया गया?

☑जवाब : दोनों सहाबा रजि. को नबी (ﷺ) से बहुत मुहब्बत थी इसलिए उनकी इच्छा अनुसार उनको आप (ﷺ) के पास में दफनाया गया।

हजरत उमर रजि. ने अम्मा आइशा रजि. से बकायदा परमिशन ली रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास दफ़न होने के लिए। अधिक जानकारी के लिए देखे - Sahih Bukhari : 1392

इस पर किसी सहाबा का एतराज साबित नहीं हैं।

✓ सवाल : क्या सहाबा में से किसी का इंतेक़ाल हो जाने पर दूसरे सहाबा उनकी कब्र को पुख्ता करते या उसपर इमारत तामीर करते थे?

✅ सवाल : क्या सहाबा में से किसी का इंतेक़ाल हो जाने पर दूसरे सहाबा उनकी कब्र को पुख्ता करते या उसपर इमारत तामीर करते थे?

☑जवाब : बिल्कुल नहीं! सहाबा किराम रजि. नबी (ﷺ) से बहुत ज्यादा मुहब्बत करते थे इसलिए वे अपने प्यारे रसूलुल्लाह (ﷺ) के किसी भी हुक्म की नाफरमानी नहीं करते थे,

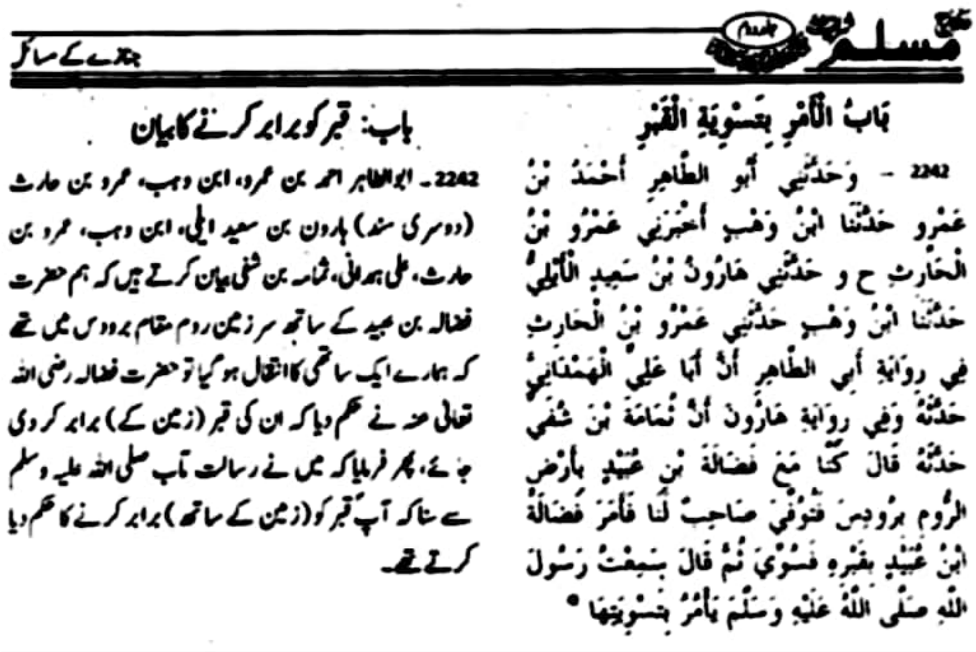
इसलिए उनकी कब्र-मुबारक रसूलुल्लाह (ﷺ) के फरमान के मुताबिक़ पुख्ता नहीं की जाती थी और न ही उसपर इमारत तामीर की जाती थी।

इसकी दलील इस तरह से हैं:-

۞ हजरत अम्र बिन अलहारित रजि. से रिवायत है की वे हजरत फादालह बिन उबैद रजि. के साथ रोमन साम्राज्य के 'रुदिस' नामक जगह पर थे,वहा पर हमारे एक दोस्त का इंतेक़ाल हो गया।

तो हजरत फादालह बिन उबैद रजि.ने हमें हुक्म दिया की "एक कब्र बनाई जाएँ और उसे समतल रखा जाए" और फिर फ़र्माया की मेने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना की उन्होंने "कब्र को जमीन के बराबर रखने का हुक्म दिया'।"

📚Reference : Sahih Muslim 2242 (968)



مسلم شریف — جلد دوم

جنازے کے مسائل

بَابُ الْأَمْرِ بِتَسْوِيَةِ الْقَبْرِ

2242 - وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ أَحْمَدُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ ح و حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الْأَيْلِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ فِي رِوَايَةِ أَبِي الطَّاهِرِ أَنَّ أَبَا عَلِيٍّ الْهَمْدَانِيَّ حَدَّثَهُ وَفِي رِوَايَةِ هَارُونَ أَنَّ ثُمَامَةَ بْنَ شُفَيٍّ حَدَّثَهُ قَالَ كُنَّا مَعَ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ بِأَرْضِ الرُّومِ بِرُودِسَ فَتُوُفِّيَ صَاحِبٌ لَنَا فَأَمَرَ فَضَالَةُ بْنُ عُبَيْدٍ بِقَبْرِهِ فَسُوِّيَ ثُمَّ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْمُرُ بِتَسْوِيَتِهَا •

باب: قبر کو برابر کرنے کا بیان

2242۔ ابوالطاہر احمد بن عمرو، ابن وہب، عمرو بن حارث (دوسری سند) ہارون بن سعید ایلی، ابن وہب، عمرو بن حارث، علی ہمدانی، ثمامہ بن شفی بیان کرتے ہیں کہ ہم حضرت فضالہ بن عبید کے ساتھ سرزمین روم مقام برودس میں تھے کہ ہمارے ایک ساتھی کا انتقال ہو گیا تو حضرت فضالہ رضی اللہ تعالی عنہ نے حکم دیا کہ ان کی قبر (زمین کے) برابر کر دی جائے، پھر فرمایا کہ میں نے رسالت مآب صلی اللہ علیہ وسلم سے سنا کہ آپ قبر کو (زمین کے ساتھ) برابر کرنے کا حکم دیا کرتے تھے۔

✓ सवाल : बुजुर्गो (औलिया अल्लाह) या किसी भी शख्स की कब्र को पुख्ता किया जा सकता हैं और क्या उसपर इमारत तामीर की जा सकती हैं?

☑जवाब : बिलकुल नहीं! जैसा की आप ऊपर सहीह अहादीस की दलील देख चुके हैं। इन अहादीस से यह साबित होता हैं की आम व ख़ास किसी की भी कब्र को पुख्ता करना और उनपर इमारत तामीर करना हराम हैं और इसकी शरई तौर पर कोई हैसियत नहीं हैं।

✓ सवाल : पैगम्बर, औलिया अल्लाह या अन्य किसी भी शख्स की कब्र के सामने सर झुका कर खड़े होना या नमाज की तरह हाथ बांधे खड़े रहना,सज्दा करना या उनका तवाफ़ करना इस्लामी-शरीयत के मुताबिक़ कैसा अमल है?

☑जवाब : पैगम्बर, औलिया अल्लाह या अन्य किसी भी शख्स की कब्र के सामने सर झुका कर खड़े होना या नमाज की तरह हाथ बांधे खड़े रहना,सज्दा करना या उनका तवाफ़ करना इस्लामी-शरीयत के मुताबिक़ सरासर नाजायज और हराम है।

इसकी दलील इस तरह से हैं:-

۞ जुन्दुब रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ)ने फ़र्माया - ".........तुम से पहले के लोग अपने अम्बिया और स्वालेहीन (नेक लोग) की कब्रो को मस्जिद (places of worship and prayers / सज्दागाहें) बना लिया करते थे, कब्रो को मस्जिद मत बनाना,में तुम को इससे मना करता हुँ"

✅ सवाल : क्या हर वो कब्र जो शरीयत के खिलाफ ऊंची और पक्की हैं, उसे गिराना लाज़िमी हैं?

☑जवाब : इस सवाल का जवाब यह हदीस बेहतर दे रही है :-

۞ हजरत अली रजि. ने हजरत अबुल हय्याज असदी रजि. से फरमाया कि तुम्हें उसी काम पर मै भेजता हूँ जिस काम पर अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने मुझे भेजा था वह यह कि "किसी बडी ऊंची कब्र को बराबर किये बगैर न छोडो , न किसी मूरत को बगैर मिटाये रहने दो "

📚Reference : Sahih Muslim 2243 (969)

مسلم شریف

جنازے کے مسائل

2243 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الْآخَرَانِ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ أَبِي الْهَيَّاجِ الْأَسَدِيِّ قَالَ قَالَ لِي عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ أَلَا أَبْعَثُكَ عَلَى مَا بَعَثَنِي عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ لَا تَدَعَ تِمْثَالًا إِلَّا طَمَسْتَهُ وَلَا قَبْرًا مُشْرِفًا إِلَّا سَوَّيْتَهُ •

2243 - یحییٰ بن یحییٰ، ابو بکر بن ابی شیبہ، زہیر بن حرب، وکیع، سفیان، حبیب بن ابی ثابت، ابو وائل، ابوالہیاج اسدی بیان کرتے ہیں کہ مجھ سے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا کہ آگاہ ہو میں تم کو اس کام کے لئے بھیجتا ہوں جس کے لئے مجھے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بھیجا تھا وہ یہ کہ میں کسی تصویر کو باقی نہ چھوڑوں مگر یہ کہ اسے مٹا دوں اور نہ کسی اونچی اور ابھری ہوئی قبر کو، مگر یہ کہ اسے (زمین) کے برابر کر دوں۔

✅ सवाल : कब्रो का उर्स (मेला/ईद) भरना शरीयत के एतेबार से कैसा अमल है?

☑जवाब :

रसूलुल्लाह {ﷺ} ने फर्माया:-

{أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ خَيرَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللَّهِ وَخَيرُ الْهُدَى هُدَى مُحَمَّدٍ وَشَرُّ الأُمُورِ مُحدَثَاتُهَا وَكُلُّ بِدعَةٍ ضَلاَلَةٌ}

۞ "अमा बाद,बेहतरीन चीज अल्लाह की किताब हैं और बेहतरीन तरीका मुहम्मद {ﷺ} का तरीका हैं। और बदतरीन काम नई ईजाद करदा काम (बिदअतें) हैं और हर बिदअत गुमराही हैं।"

📚Reference : Sahih Muslim 2005 (867)

जो लोग कब्रो पर उर्स / मेला, कव्वाली व महफिले सिमाअ, ढोल व सारंगी वगैरह मुनकरात कायम करते है उनके इस अमल की

दलील कुरआन और सुन्नत में मौजूद नहीं है। ये गैर-मुस्लिम कौम से मुसलमानो में रिवाज पकड़ा हुआ अमल है, दीन-ए-इस्लाम में इसकी कोई हकीकत नहीं हैं बल्कि ये सभी अमल बिदअत में शुमार है।

हजरत अब हुरैरह रजि. से रिवायत है नबी करीम {ﷺ} ने फर्माया, "अपने घरो को कब्रिस्तान मत बनाओ, और न मेरी कब्र को ईद (मेलागाह) बनाओ और मुझ पर दरूद पढ़ो, तुम जहाँ कही भी होंगे तुम्हारा दरूद मुझ तक पहुच जायेगा"

Reference : Sunan Abu Dawud 2042

٢٠٤٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بنُ صَالِحٍ: قَرَأْتُ عَلَى عَبْدِ الله بنِ نَافِعٍ قال: أخبرني ابنُ أبي ذِئْبٍ عن سَعِيدٍ المَقْبُرِيِّ، عن أبي هُرَيْرَةَ قال: قال رَسُولُ الله ﷺ: «لَا تَجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قُبُورًا، وَلَا تَجْعَلُوا قَبْرِي عِيدًا، وَصَلُّوا عَلَيَّ فَإِنَّ صَلَاتَكُمْ تَبْلُغُنِي حَيْثُ كُنْتُمْ».

۲۰۴۲- حضرت ابوہریرہ ؓ سے مروی ہے رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: ”اپنے گھروں کو قبرستان مت بناؤ۔ اور نہ میری قبر کو عید (میلہ گاہ) بناؤ اور مجھ پر درود پڑھو۔ تم جہاں کہیں بھی ہو گے تمہارا درود مجھ کو پہنچ جائے گا۔“

561

فوائد ومسائل: ① ”گھروں کو قبرستان بنانا“ یوں ہے کہ وہاں نماز‘ تلاوت اور اذکار کے اعمال ترک کر دیے جائیں جیسے کہ قبرستان میں نہیں کیے جاتے۔ اس میں مردوں کو بالخصوص تاکید ہے کہ اپنی نمازوں کا ایک حصہ یعنی سنن اور نوافل گھروں میں پڑھا کریں جو کہ نزول برکات کا باعث ہیں اور گھر والوں کے لیے اعمال خیر کی ترغیب وتربیت بھی۔ اس کا دوسرا مفہوم یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اپنی میتوں کو اپنے گھروں میں مت دفن کیا کرو بلکہ قبرستانوں میں دفناؤ۔ ② رسول اللہ ﷺ کی قبر مبارک کے پاس مجمع لگانا‘ بھیڑ کرنا‘ بہت زیادہ دیر کھڑے رہنا یا بار بار آنا اسے ”میلہ گاہ“ بنانا ہے۔ جو کہ ممنوع اور انتہائی خلاف ادب ہے۔ جب رسول اللہ ﷺ کی قبر مبارک کا ادب یہ ہے تو دیگر صالحین کی قبروں پر اجتماع اور عرس بطریق اولیٰ ممنوع اور حرام ہیں۔ ③ رسول اللہ ﷺ پر صلاۃ وسلام پڑھنے کے لیے سفر کی مشقت اٹھانے کی کوئی ضرورت نہیں‘ انسان جہاں کہیں ہو اس کا درود آپ ﷺ کو پہنچا دیا جاتا ہے۔

٢٠٤٢- تخريج: [إسناده حسن] أخرجه أحمد: ٢/٣٦٧ عن عبدالله بن نافع بن أبي نافع الصائغ القرشي المخزومي به.

इस हदीस से पता चलता है की रसूलुल्लाह {ﷺ} की कब्र-मुबारक के पास आकर ईद त्यौहार,मेला/उर्स जैसा इज्तिमाअ करना दुरुस्त नहीं है तो और किसी की आप {ﷺ} के मुकाबले क्या हैसियत हो सकती है। काजी सनाउल्लाह पानीपती हनफ़ी

(सूरह आले इमरान की आयत 64) की तफ़सीर के जिम्न में फायदा के उन्वान के तहत लिखते है - "औलिया और शुहदा की कब्रो पर जाहिल हजरात जो सजदे करते हैं, उनके इर्द-गिर्द तवाफ़ करते, चिरागा और दिये जलाते है, कब्रो पर मस्जिदे काइम करते है और साल भर बाद ईदो की तरह जो इज्तिमाअ मुनअकिद (आयोजित) करते है और इसे उर्स का नाम देते है ये जाइज नहीं है। (तफ़सीरे मजहरी)

✓ सवाल : आजकल के जमाने में कुछ बिदअतियों ने बाज कब्रो को पुख्ता कर लिया हैं,कब्रो पर इमारत तामीर कर ली हैं व उर्स और इस जैसी तमाम नाजायज खुराफातो को जायज ठहरा लिया है इससे उम्मत पर क्या साइड इफ़ेक्ट (गलत प्रभाव) पड़ रहा हैं?
☑जवाब : आजकल कुछ बिदअती जमाते ऐसी पाई जाती हैं जिन्होंने अपने नफ़्स की पैरवी करने के लिए कुरआन और हदीस को छोड़ दिया हैं और शैतान के बहकावे में आकर इन्होंने प्यारे रसलुल्लाह (ﷺ) के फरमान के खिलाफ अमल करना और फतवा देना शरू कर दिया हैं जिसकी वजह से कई भोले-भाले मुसलमान कब्र-परस्ती (शिर्क) करने में मशगूल हो गए हैं, और उन्होंने इसे ही दीन समझ लिया हैं जबकि इन बातिल अक़ीदों और खुराफतों का दीन-ए-इस्लाम से कोई ताल्लुक नहीं हैं।
आज हालात ये हो गए हैं की अगर कोई मुसलमान इन्हें सही दीन समझाना चाहता हैं और सही दीने-इस्लाम की तरफ यानी "कुरआन और हदीस" की तरफ मोड़ना चाहता हैं तो उसको "गुस्ताखे-रसूल" कहा जाता हैं उसको तरह-तरह से परेशान करने की कोशिश की जाती हैं।
बाज लोग तो "काफ़िर" कहने से भी गुरेज नहीं करते।

सही बुख़ारी

बाब 61 : कब्रों पर मस्जिद बनाना हराम है।

- باب: ما يكره من اتخاذ المساجد على القبور

1330 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आपने अपनी वफात की बीमारी में यह फरमाया, अल्लाह तआला यहूद और नसारा पर लानत करे कि उन्होंने अपने पैगम्बरों की कब्रों को सज्दे की जगह बना लिया। आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि अगर यह डर न होता तो आपकी कब्र मुबारक को बिल्कुल जाहिर कर दिया जाता, मगर मुझे डर है कि उसको भी सज्दागाह न बना लिया जाये।

١٣٣٠ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ: (لَعَنَ ٱللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى، اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ). قَالَتْ: وَلَوْلاَ ذٰلِكَ لأَبْرَزُوا قَبْرَهُ، غَيْرَ أَنِّي أَخْشَى أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا. [رواه البخاري: ١٣٣٠]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है कि मेरी कब्र पर ईद की तरह मेला न लगाना, लेकिन अफसोस आज का नाम निहाद मुसलमान इस फरमाने नबवी की खुलकर मुखालफत कर रहा है। अल्लाह का शुक्र है कि हुकूमत सऊदिया ने अभी तक इस पर कन्ट्रोल किया हुआ है।

सही बुख़ारी

427 : आइशा रज़ि. से रिवायत है कि उम्मे हबीबा रज़ि. और उम्मे सलमा रज़ि. ने हब्शा में एक गिरजाघर देखा था, जिसमें तस्वीरें थी। जब उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उसका ज़िक्र किया तो आपने फरमाया, उन लोगों की आदत थी कि उनमें अगर कोई नेक मर्द मरता तो उसकी कब्र पर मस्जिद और तस्वीर बना देते। कयामत के दिन यह लोग अल्लाह के नजदीक बदतरीन (बहुत बुरी) मख़्लूक हैं।

: عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: أَنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ وَأُمَّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ذَكَرَتَا كَنِيسَةً رَأَيْنَهَا بِالْحَبَشَةِ، فِيهَا تَصَاوِيرُ، فَذَكَرَتَا ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: (إِنَّ أُولَئِكَ، إِذَا كَانَ فِيهِمُ الرَّجُلُ الصَّالِحُ فَمَاتَ، بَنَوْا عَلَى قَبْرِهِ مَسْجِدًا، وَصَوَّرُوا فِيهِ تِلْكَ الصُّوَرَ، فَأُولَئِكَ شِرَارُ الْخَلْقِ عِنْدَ اللهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ).

[رواه البخاري: ٤٢٧]

फायदे : आजकल तो लोग कब्रों को सज्दा करते हैं और खुलकर उनका तवाफ करते है जो खुला शिर्क है। इस हदीस से मालूम हुआ कि बुजुर्गों की कब्रों पर मस्जिद बनाना यहूदियों और ईसाइयों की आदत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे हराम करार दिया है। नीज आपने तस्वीर बनाने को हराम फरमाकर बुतपरस्ती की जड़ काट दी है।

435 : आइशा रज़ि. और इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है, उन दोनों ने फरमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आखरी वक्त आया तो एक चादर अपने ऊपर डालने लगे। फिर ज्यों ही घबराहट होती तो उसे चेहरे से हटा देते। इसी हालत में आपने फरमाया, यहूदियों और ईसाइयों पर अल्लाह की लानत हो। उन्होंने अपने अम्बियाओं (नबीयों) की कब्रों को इबादत की जगह बना लिया। जैसे आप उनके कामों से (उम्मत को) खबरदार करते थे।

: عَنْ عَائِشَةَ وَعَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالاَ: لَمَّا نَزَلَ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ، طَفِقَ يَطْرَحُ خَمِيصَةً لَهُ عَلَى وَجْهِهِ، فَإِذَا اغْتَمَّ بِهَا كَشَفَهَا عَنْ وَجْهِهِ، فَقَالَ وَهُوَ كَذَلِكَ: (لَعْنَةُ اللهِ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى، اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ). يُحَذِّرُ مَا صَنَعُوا. [رواه البخاري: ٤٣٥، ٤٣٦]

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में है कि यहूदियों और इसाईयों ने अपने नबीयों और बुजुर्गों की कब्रों को सज्दागाह बना लिया, इस बातचीत के अन्दाज से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को आगाह किया है कि कहीं मेरी कब्र के साथ ऐसा सलूक न करें, लेकिन नाम के मुसलमानों पर अफसोस है कि वह उसकी खिलाफवर्जी करते हैं। अल्लाह तआला सऊदी अरब की हुकूमत को अच्छा बदला दे कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कब्र मुबारक पर लोगों को शरीअत के अलावा दूसरे कामों से बाज रखती है।